International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 06-10-2020; Accepted: 21-10-2020; Published: 07-11-2020
Volume 2; Issue 4; 2020; Page No. 27-32

गोंड आदिवासी समुदाय का सांस्कृतिक जीवन: तेलंगाना राज्य के आदिलाबाद जिले के संदर्भ में

सी एच नंद कुमार
दलित-आदिवासी अध्ययन और अनुवाद केंद्र, हैदराबाद विश्विद्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत

सारांश
भारत में भिन्न-भिन्न प्रकार के आदिवासी समुदाय निवास करते हैं। देश के अलग-अलग राज्यों में नाग, कमार, भील, थारू, मुंडा और गोंड आदि समुदाय के लोग प्रमुख स्थान रखते हैं। आज भी कुछ आदिवासी समुदायों का जीवन जीने का ढंग आदिम पद्धतियों से ही भरा नजर आता है। यह आदिमता हमें उनके पारंपरिक संस्कृति, जीवन दर्शन, शिक्षा,चिकित्सा,कृषि आदि कार्यों में देखने को मिलती है। अब भले ही कुछ आदिवासी समुदायों ने स्थायी ढंग से कृषि, पशुपालन, घरेलु व्यवसाय, मजदूरी आदि कार्यों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया है, लेकिन उनकी आर्थिक स्थिति में कोई सुधार दिखाई नहीं देता है। देश के हर एक राज्य के आदिवासी समुदाय की अपनी-अपनी प्राकृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान है। विभिन्न राज्यों में निवास करने वाली आदिवासी समुदाय की संस्कृति में भी अंतर नजर आता है। यह रहन-सहन, खान-पान,भौगोलिक भिन्नता,पर्व-त्यौहार आदि में देख सकते हैं।

मूल शब्द: आदिलाबाद, आदिवासी, समुदाय, सांस्कृतिक

प्रस्तावना
आजादी के बाद गोंड आदिवासी समुदाय के पारंपरिक जीवन में शहरीकरण, आधुनिकीकरण, भूमंडलिकरण इत्यादि के प्रभाव से बदलाव तो जरूर नजर आने लगा है। शहरी क्षेत्रों में निवास करनेवाले गोंड समुदाय लोगों में और गैर-गोंड समुदाय के लोगों में अंतर कर पहचानना मुश्किल है। लेकिन शहर से दूर जंगलों, गिरी-कंधराओं में निवास करनेवाले गोंड समुदाय के लोगों की जीवन शैली आज भी प्राचीन परंपराओं से प्रफुल्लित होती हुई नजर आती है। वर्तमान समय में उनके रीति-रिवाज जैसे खान-पान, पर्व-त्यौहार, वेश-भूषा, गहने, गोदना, पूजा-पाठ और अनुष्ठान इत्यादि को वे परंपरागत तरीके से मनाते हैं, जिसे हम निम्नांकित शीर्षकों में देख सखते हैं।

जन्म
मनुष्य जीवन में जन्म, विवाह और मृत्यु के तीन दशाएँ प्रमुख होती हैं। गोंड आदिवासी समुदाय में जन्म संबंधित प्रक्रिया को हरका मानिक राव इस प्रकार बताते हैं कि-जब कोई महिला गर्भवती होती है उसके के अंतिम दशा में उसे अपने पारंपरिक पद्धति के द्वारा उसकी प्रसव क्रिया की जाती है। गर्भवती स्त्री की प्रसव क्रिया में 'सोनी बाई' (दाई) नर्स की तरह काम करती है। नवजात शिशु जब जन्म लेता है तब उसे पानी से स्नान नहीं करवाते है, उसके शरीर को ज्वार के आटे से पोंछकर साफ करते है, उसके बाद स्नान करवाते है। इससे पहले भी एक दशा होती जब शिशु जन्म लेता है तो वह स्तब्ध अवस्था में रहता है, उसे उस अवस्था से जगाने के लिए किसी थाली या किसी वस्तु द्वारा की गई ध्वनि को सुनाया जाता है। इसके बाद प्राकृतिक औषधि लायी जाती है। भिलावाँ के पत्ते और एक-डेड फिट की तेंदु के पेड़ की टहनियाँ यह लेकर आते है। इन टहनियों को घर के द्वार के पास रखते है। यह बताया जाता है औषधि कीटनाशक होती है। यह औषधि घर के आस-पास की दस मीटर क्षेत्र की हवा को शुद्ध करती है। बालक के जन्म दिन पर एक त्यौहार भी किया जाता है। छोटे बालक के नाभि की नाल को वे बाँस की लकडी से काटते है। इससे काटने से किसी प्रकार की बालक को हनी नहीं होगी। नाभि की नाल निकल जाने के बाद एक शुद्धि कार्यक्रम होता है। इस कार्यक्रम को सोनी बाई (दाई) और गाँव की एक बुजुर्ग महिला दोनों मिलकर देवताओं को नैवेद्य समर्पित करते हैं। पानी,अग्नि, हवा और धरती आदि देवता को अलग प्रकार के नैवेद्य रखकर पूजा करते हैं। इसे ही 'पुटी पेनक'1 कहते है। कोयला, आटा, पैसे,तील और ज्वार आदि को देवताओं को समर्पित करते हैं। इसके बाद शुद्धि कार्यक्रम होता है। नवजात शिशु के घर में बिना पैर धोहे घर में किसी व्यक्ति का प्रवेश वर्जित रहता है। इस कार्यक्रम से पहले नवजात शिशु और उसकी माँ को जमीन पर ही सोना होता है। इस कार्य के बाद ही नवजात शिशु के माँ को और बालक को खाट पर सोने दिया जाता है। इस कार्य को 'तोकुड पोरी' 2 कहते है।

नामकरण

नामकरण की रीति हर परिवार के लिए अनिवार्य है। एक परिवार को अपने बच्चों और रिश्तेदारों को पहचानने के लिए नामकरण करना सर्वसाधारण तौर पर महत्त्वपूर्ण भी है। पितृसत्तात्मक परिवारों में शादी के बाद पति के परिवार का नाम तय हो जाता है। मातृसत्तात्मक परिवारों में शादी के बाद पुरुष का नाम अपने पत्नी के परिवार से तय किया जाता है। गोंड आदिवासी समुदाय में बालक को जन्म दिन से लेकर बारह दिन हो जाने के बाद सवा महीने तक कभी समय के अनुसार नामकरण कार्यक्रम मनाने का रिवाज गोंड आदिवासी समुदाय में प्राचीन काल से प्रचलित है। इसे गोंडी भाषा में 'परोल शोभनी' 3 कहते है। इसका अर्थ यह है कि बच्चे को एक विशेष नाम प्रदान कर उसके जीवन रूपि काया को सुशोभित करना ऐसा होता है। इस संस्कार से बच्चा अपने धर्म एवं कुल के अनुरूप रखे गये नाम या संज्ञा से जाना जाता है। जब तक यह संस्कार संपन्न नहीं होता तबतक बच्चे को झूले में रखा या सुलाया नहीं जाता। इस रस्म में बच्चे की मामा-मामी एवं महिलाओं की ही प्रमुखता होती हैं। बच्चे एवं उसकी माता को नहला धूलाकर नए वस्त्र पहना कर उसके बाद बच्चे को झूले में सुलाते है। झूले के दोनों ओर में महिलाएं खड़ी हो जाती हैं। सर्व प्रथम ओखली का पत्थर एक ओर की महिलाएं अपने हाथों में पकड़ती हैं और झूले के ऊपर से दूसरे ओर में खड़ी महिलाओं के हाथों में 'लिंगो को लीजिए' (धर्म गुरु) ऐसा कहते हुए देती हैं, दूसरी ओर की महिलाएं 'लिंगो को दीजिए' कहकर लेती हैं इसी प्रक्रिया को झूले के नीचे से भी किया जाता है। इस क्रिया के बाद उसे झूले के बाहर यथास्थान पर रख देती हैं। उसके बाद बच्चे की मामी बच्चे को माता की गोद से उठाकर झूले में सुलाती है और दोनों ओर में खड़ी महिलाएँ गीत गाते हुए झुला झुलाती हैं।

बच्चे की माँ बच्चे के कान के पास अपना मुँह ले जाकर जिस नाम से उसे संबोधित करना है उस नाम से पुकारती है। उस नाम को सुनकर सभी लोग तालियां बजाते हैं। इसी समय से बच्चे का नामकरण पूरा हो जाता है।

मुंडन

इस संस्कार को गोंडवाना प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न संज्ञाओं से जाना जाता है जैसे-सट्टी, सयटी, छट्टी, पंचबंधन आदि। नवजात शिशु का जन्म होने पर पांच दिन के बाद यह संस्कार किया जाता है, इसलिए उपरोक्त संज्ञाओं से पुकारा जाता है। इस संस्कार को संपन्न करने हेतु बच्चे के पिता द्वारा अपने करीबी रिश्तेदार, पड़ोसियों और गाँव वालों को ही निमंत्रण दिया जाता है। निर्धारित तिथि एवं समय पर सभी महिलाएं बच्चे के माता-पिता के घर में विशेष रूप से शाम के समय पधारते हैं। इस संस्कार में बच्चे के मामा-मामी नहीं रहने पर मामा के रिश्तेदारों से कोई भी दूर या करीब रिश्ते के मामा-मामी की उपस्थिति अनिवार्य होती है। बच्चे को माता की गोद में विशेष रूप से पूरब की ओर मुँह करके बिठाया जाता है। बच्चे की माता के बाएं ओर मामा और दाएं ओर मामी बैठती है। मामा द्वारा उस्तरा या कैंची से बच्चे के सीर के बाल काटे जाते हैं और मामी उन काटे हुए बालों को अपने आँचल में लेती जाती है। बच्चे के बाल नीचे गीरने नहीं दिए जाते। कहीं-कहीं इस रस्म को मामा, मामी बच्चे के सीर के मात्र पांच दस बाल काट कर ही पूरा करते हैं और शेष बाल बाद में नाई द्वारा घर में बुलाकर कटवा देते हैं। इस रस्म के लिए बच्चे के पिता मामा और मामी को अपनी इच्छा के अनुसार दक्षिणा देते हैं। कटवाए गए बालों को मामी घर के बाहर दूर ले जाकर फेंक देती है। बच्चे एवं उसके माताजी को नहला धूलाकर नए वस्त्र पहनवाए जाते हैं। इसके बाद गाँव की महिलाओं द्वारा बच्चे की कमर में रिश्तेदारों के पांच पंचों की ओर से पांचसरी युक्त पांच गांठ वाला रेश्मी धागे को बंधा जाता है। माता की गोद हमेशा भरी रहे इसलिए उसकी गोद चावल के साथ-साथ सुखा खोपरा, बादाम, खजूर, सुपारी और हल्दी के सूखे तुकडे से भर दिया जाता है। सभी महिलाएं बच्चे एवं उसकी माता को आशीर्वाद देकर मंगल कमाना की इच्छा प्रकट करती हैं। अंत में बच्चे के माता-पिता द्वारा भोजन की तैयारी की जाती है। पहले बालकों को खिला दिया जाता है, बाद में सब लोग भोजन करते हैं। इससे कार्यक्रम का पूरा होता है।

विवाह

विवाह एक सार्वभौमिक सामाजिक और सांस्कृतिक रिवाज है। इससे एक पुरुष और स्त्री दोनों पारिवारिक जीवन का आरंभ करते हैं। यह परिवार व्यवस्था का आधार है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो बच्चों को पाने के लिए समाज की अनुमति के साथ यौन संबंध बनाने में सक्षम बनाती है। इसे समाज की निरंतरता का स्रोत भी कहा जा सकता है। विवाह एक प्रतिपूर्ति का आधार है। विवाह सभी समाजों में होता है लेकिन विभिन्न समाजों में इसके नियम अलग-अलग हैं। इन्हें गोंड आदिवासी समुदाय में निम्न रूप में देख सकते हैं। गोंड आदिवासी समुदाय में एक समय में चार प्रकार के विवाह प्रचलन में थे जो निम्न हैं :

1. काजी कोबरे यह विवाह गोंड आदिवासी समुदाय के बुजुर्ग लोगों द्वारा अपने निर्धारित नियमों के अनुसार किया जाता है जिसे काजी कोबरे कहते है। उपरोक्त जिसका जिक्र किया जा चुका है।
2. पीसी वाट्वल मर्मी इस प्रकार के विवाह में लड़के के गाँव वाला कोई बुजुर्ग व्यक्ति और लड़की के गाँव वाला कोई बुजुर्ग व्यक्ति दोनों आपस में बात-चित कर तय करने के बाद लड़की पानी भरने जाते समय हो, जंगल में किसी काम के लिए जाती है तब हो या बाजार के लिए गई लड़की को लड़का भगाकर अपने घर ले जाता है, जिसे पीसी वाट्वल मर्मी कहते है।

3. लामसड़े मर्मी लड़के को लड़की के घर ले जाकर विवाह करना इसे लामसड़े विवाह कहते है। इस प्रकार के विवाह कुछ दशकों पहले लड़के को लड़की के घर पर ही रखा जाता था लेकिन वर्मान समय में यह प्रथा बंद हुई है।
4. सीवर सोता लड़का और लड़की एक दूसरे को प्रेम कर विवाह तय कर लेना, यह विवाह कुछ दशकों पहले प्रचलित था लेकिन वर्तमान समय में यह प्रथा बंद हो गई है।

मृत्यु संस्कार

वर्तमान समय में भी गोंड जानजाति में मृत्यु रस्म मनाने की विधि-विधान प्रचलित है। कोई भी आदिवासी समुदाय हो आज भी वे अपने प्राचीन प्रथाओं के अनुसार ही रस्म मनाते हैं, चाहे वह विवाह हो या जन्म आदि से सबंधित संस्कार हो। मनुष्य जीवन में तीन प्रकार के प्रमुख संस्कार होते हैं एक जन्म, दूसरा विवाह और तीसरी मृत्यु। गोंड आदिवासी समुदाय में दो प्रकार के मृत्यु नियम होते हैं एक तो अविवाहित लोगों का मृत्यु नियम और दूसरा विवाहित लोगों मृत्यु का नियम। उनके संस्कृति के अनुसार अविवाहित युवा हो या युवती हो उन्हें कुछ नियमों से छूट दी जाती है। इस समुदाय में मृत देह को खनन नहीं किया जाता है, उसे जमीन पर गड्ढा कर दफनाया जाता है। मृतक के देह को दक्षिण की ओर सिर और उत्तर की ओर पैर रखकर दफनाया जाता है।

मृतक को ढोने वाले चार लोग श्मशान के स्थान पर ज्वार, कोयला, हल्दी, पैसे, अटा आदि वस्तुओं को रखकर हाथ जोड़ते हैं। उसके पश्चात मृतक को दफनाया जाता है। मृतक का अंतिम संस्कार होने के बाद वे चार लोग पानी लेकर आते हैं। पलास के पत्ते और सेमर के पेड़ के पत्ते को पार कर पानी लेकर घर आजाते हैं। उस पानी में आग के कोयले डालकर पानी को शुद्ध किया जाता है। इसके बाद चाय पीने का कार्यक्रम होता है। मृतक के घर में मृत्यु स्थल पर पांच दिन दिया जलाया जाता है और उसे पांचवे दिन बुझाया जाता है। इस प्रक्रिया को 'दिया मलुस्वल कायदा'(दिया जलाने का कार्यक्रम) कहते हैं। उसके बाद मृतक के दिन मनाने की बातचीत होती है। कुछ लोग कार्तिक मास में पितर त्यौहार दिन ही मृतक के दिन मानते हैं। उस रात में 'करुणा मरूणा कथा' और 'वंश कथा' इसके साथ-देवता की कथा रखी जाती है। यह प्रधान जाति के लोगों द्वारा बताई जाती है। यह कथा गोत्र के अनुसार होती है। जिस गोत्र के व्यक्ति मृत्यु हुई है उसी गोत्र के प्रधान जाति वाले लोगों द्वारा यह कथा सुनाई जाती है। यह कथा सारी रात चलती है और अंत में कथाकार मृतक किस योनी में जन्म लिया उसे बताकर कथा समाप्त कर देता है। कथा समाप्त होने के बाद उसे कुछ चीजें दान में दी जाती हैं। यह परंपरा पहले से चली आ रही है और आज भी चल रही है। मृतक से संबंधित सारे वस्तु प्रधान को दान के रूप में दिये जाते हैं। इसके साथ-साथ सामर्थ्य के अनुरूप कोई गाय, बकरी आदि को भी दान में देते हैं। अंत में 'तुम' कार्यक्रम होता है, जिसमें मृतक के गोत्र देव यानि हर गोत्र का अपना-अपना कुलदेव होता है मृत आत्मा को उस देवता के साथ मिलाकर छोड़ देते है।

देवी-देवता

गोंड आदिवासी समुदाय में पेर्सापेन को (बड़े देवता) कहा जाता है। इसे वे एक विशेष त्यौहार के रूप में मनाते हैं। पेर्सापेन त्यौहार को भक्ति-भाव से परिवार के साथ मिलजुल कर मनाते हैं। गोंड आदिवासी समुदाय में के चार, पाँच, छह तथा साथ सगा परिवार के लोग अपने कुलदेवता के रूप में पेर्सापेन को मानते हैं। वे इस त्यौहार को परिवार और रिश्तेदारों के साथ मिलकर लगातार तीन-चार दिन विधि-विधान के साथ मनाते हैं। बीते वर्ष में महुए के पेड़ पर रखे हुए पेर्सापेन को वे अपने घर पर जो दामाद आते हैं उन्हीं के हाथों से पेड़ से नीचे उतारा जाता है और देवता को गाँव में लेकर आते हैं। उसके बाद अनेक प्रकार की पूजा अर्चना की जाती है। कुछ समय बाद बहुओं का मिलन कार्यक्रम रखा जाता है। पेर्सापेन को गंगा स्नान करवाकर फिर गाँव में ले आकर पूजा कार्यक्रम रखा जाता है। इसके बाद 'कायदा' नामक कर्यक्रम किया जाता है फिर गाँव के चरों ओर देवता को घुमाया जाता है। देवता को अनेक प्रकार के नैवद्य समर्पित करते हैं। बाद में बहुओं का परिचय कार्यक्रम रखा जाता है इसे 'बेटिंग' कहते हैं। अंत में इस देवता की पूजा अर्चना कर फिर से उसी महुए के पेड़ पर दामादों के हाथों से सुरक्षित रख देते हैं। इसके बाद सामूहिक भोजन रखा जाता है। वे अंत में पेर्सापेन को प्रार्थना करते हुए कहते हैं हे भगवान हमारा परिवार, गाँव, फसलें एवं समाज सुख संवृद्धि से हर फल खुशी से रहे।

'आदिलाबाद जिला गोंड आदिवासी समुदाय के संस्कृति और परंपरा का गढ़ है। यहाँ के जंगलों में की अलग-अलग गुफाएँ गोंड आदिवासी समुदाय की पूजा स्थल हैं। कई शताब्दियों से इस समुदाय के लोग गुफाओं में देवता की पूजा पाठ करते हुए अपने संस्कृति और परंपरा को बचाते आ रहे हैं। इन गुफाओं में स्थापित देवताओं की पूजा के लिए गोंड और कोलाम आदिवासी समुदाय के लोग अधिक संख्या में आते हैं। यहाँ पर मंगल और रविवार के दिन लोग की भीड़ उमड़ जाती है। जंगु बाई पर आस्था रखने वाले भक्तों का मानना है कि कोई भी मन्नत मन में सोच लेने पर देवता उनकी इच्छा को पूरी करता है। भक्तों का कहना है कि जंगु बाई देवता का इतिहास कई वर्ष पुराना है। यह देवता केरामेरी तहसील के परोंदोली गाँव को जाने वाले रास्ते में एक गाँव पड़ता महाराज गुडा वहाँ से जंगुबाई देवता के पास जा सकते है। यह क्षेत्र गने जंगलों भरा है। गोंड आदिवासी समुदाय के लोग इस देवता की दीक्षा लेते हैं। यहाँ शराब पीकर और मांस आहार खाकर जाना मना है। इस देवता को नैवद्य के रूप में मीठा और नारियल लेकर भक्त लोग समर्पित करते हैं।

पर्व-त्यौहार, मेलें

पर्व-त्यौहार का मनुष्य जीवन से अटूट संबंध रहा है, त्यौहारों में हमारी संस्कृति की सुगंध महकती है । त्यौहार जीवन में उल्लास एवं खुशियों को भरता हैं । भारत देश में भिन्न-भिन्न समुदाय वाले लोग हर मौसम में पर्व-त्यौहारों मनाते हैं । एक ओर पर्व-त्यौहार जहाँ सबको एकजुट करते हैं तो वहीं जीवन के तमाम दुखों को भुलाकर सबके लिये खुशियां मनाने का अवसर भी प्राप्त करवाते हैं । त्यौहारों को मनाने के साथ-साथ हम सांस्कृतिक रूप से समृद्ध होते जाते हैं । गोंडी आदिवासी समुदाय में साल के हर एक महीने में कुछ न कुछ पर्व त्यौहार मनाया जाता है ।

होली पर्व को गोंडी आदिवासी समुदाय के लोग मुख्यधारा के समाज के लोगों से बिल्कुल अलग मनाते हैं। इस पर्व को मार्च महीने में पुर्णिमा के दिन मनाया जाता है । इसे गोंडी आदिवासी समुदाय के लोग अपने-अपने गाँव में स्त्री-पुरुष सभी मिलकर मनाते हैं । होली के दिन गाय के गोबर के उपले जमाकर उसकी पूजा करने के बाद उसे दहन कर देते हैं । उसके बाद वे अग्नि देवता को प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हमारे भीतर के सारे कुविचार नष्ट कर दो । पर्व के दिन गीत गाये जाते हैं । पर्व जिस दिन मनाया जाता है उस के पूर्व के कुछ दिन पहले से ही इसकी तैयारी की जाती है। हर दिन शाम के समय में "गवराना कटया, सिम्ट उंदी लटिया, किस कुंडा मनता, नीर मिटके किया ऐसे गीत गाते हुए गाँव के बाहर लकड़ियां ले जाकर जमा करते हैं । जमा किये हुए लकड़ी के ढेर को " शिव गवरा जो हार जो, वणोंरीयाल फो दाय फो। ऐसे नारे लगते हुए उसके गोल चक्कर लगाते हैं । पुर्णिमा के दिन शाम को गाँव के सब लोग मिलकर आरती ले जाते है। यहाँ एक दो फिट का गड्ढा खोदकर उसमें पैसे और लोहे एक खम्बा खड़ा किया जाता है । उसे कुम कुम, गुलाल आदि चडाकर पूजा करते हैं । बाद में उसे जलाते है " शिवम् गवरा ! शिवम् गवरा !" चिल्लाते हुए उसके गोल चक्कर लगाते हैं । उसी समय शिव जी के वेश में एक व्यक्ति हाथ में त्रिशूल लेकर आता है और जलते होली को चक्कर लगाकर अपने त्रिशूल से क्रोधित होकर वार करता है । अंत में सभी लोग "शिवम् गवरा जो हार जो !" ऐसे नारे लगाकर उसके गोल चक्कर लगाते हैं । उसके बाद शिव से सम्बन्धित गीत सारी रात गाकर होली का जागरण करते हैं । वे दूसरे दिन सुबह घर लौट आकर और नहा धोकर फिर से होली के पास जाकर गाय के सूके गोबरियों को जलाकर उसकी राख अपने मस्तक पर लगाकर उसकी पूजा करते हैं । इस राख को सभी परिवार के लोगों को लगते हैं। इसके बाद गुलाल,पलास के फूलों आदि का रंग तैयार करके होली खेलना शुरू कर देते हैं ।

दंडारी (एतमा पेन) त्यौहार

दंडारी त्यौहार को ऑक्टोबर महीने में मनाया जाता है । इस महीने में गोंड आदिवासी समुदाय के लोग 'आकड़ा येत्मासार देवता' की पूजा करते हैं । इस अवसर पर गाय,बैल,बकरी आदि जानवरों की भी पूजा की जाती है । गाय,बैल आदि जानवरों को चारा देने के बाद ही वे भोजन करते हैं । आकड़ा येत्मासार देवता की पूजा करने के बाद वे गुसाड़ी नृत्य, दंडारी नृत्य पर छोटे बालक, स्त्री,पुरुष सब मिलजुलकर नाच-गान करते हैं । गोंड आदिवासी समुदाय में इस त्यौहार को बढे धूमधाम से मनाया जाता है ।

आकाड़ी त्यौहार

अकाड़ी त्यौहार इसलिए मनाया जाता है कि अमावस्या और पौर्णिमा के बीच का समय खेती का काम-काज करने हेतु अनुकूल हो, गाय, बछड़े, बकरी जानवरों और उनकी देखभाल करनेवाले व्यक्ति जंगल से सुरक्षित तरीके से घर वापस आ जाये । यह दो त्यौहार एक बाद एक मनाते हैं । इस त्यौहार पर पहले पुरुष लोग गाँव से कई दूर समावेश होकर 'शिवजावाल' देवता को मुर्गी की बलि चढ़ाते हैं । इस संदर्भ में वे उस देवता को 'दतुर जवाल' के रूप में मनाते हैं । जो उनके पशुओं की रक्षा करते हैं । इसी संदर्भ में निम्न गीत की प्रस्तुती करते हैं ।

सुड्दातुडी अव्वल
तोस्कोट मनदना
पियांग मुरांग नेटाल तोस्कोट मनदना
काय काल अईवा

दतुरी माँ से प्रर्थना करते हुए कहते हैं कि हे धरती माँ ! हम सब लोग सुखी से जीवन व्यतीत करे जैसा आशिर्वाद दो । हे धरती माँ ! आज से हमारे गाय, बछड़े, बकरी आदि जानवर और उन्हें देखभाल करनेवाले व्यक्ति भी सुरक्षित रहें जैसा देखभाल करो । हमारे पशुओं को और हमें किसी तरह की हनी नहीं होनी चाहिए ऐसे कहते हुए प्रार्थना करते हैं ।

इस तरह की मनौतिया पूरी करने के बाद ही सारे पशुओं को जंगल में चराने ले जाते हैं । वे गाय, बछड़े आदि पशुओं को जंगल में चराने के लिए भेज देने वाली प्रथा को विदाई समारोह के रूप में मनाते हैं । उसके बाद आगले दिन अकाड़ी त्यौहार मनाते हैं । इस त्यौहार को जंगल के राजा को गौरवान्वित करने हेतु मनाते हैं । उनका मनना है कि जंगल का राजा पहाड़ों और सारे जंगल पर अपने अधिकार रखता है । पशुओं को चराने के लिए जंगल में भेज देने पर उस दिन गाँव के लोग खेत में काम नहीं करते हैं । दोपहर के समय में पुरुष और लड़के मिलकर जंगल चले जाते हैं । वे अपने साथ घी बनाने की सामग्री, गाय के सिंग चिलने के लिए रम्पा ब्लेड लेकर जाते हैं । यह सारी सामग्री उनके पास ही रहती है । वे गाँव के बाहर पश्चिम दिशा में छोटे पहाड़ के सामने बंजर स्थान पर सब लोग मिलते हैं । वहाँ 'दंडिर' पेड़ के नीचे कोई बड़ा पत्थर देखकर वह कौनसा पेड़ होगा ऐसे स्पष्ट न होने पर किसी छोटे पौधे की पूजा करते हैं ।

मेलें

आदिलाबाद जिले में गोंड आदिवासी समुदाय के लोग अनेक मेले मनाते हैं जैसे श्यामपुर गाँव में बुडुम देव की जातरा, लिंगापूर में शिव जातरा, नार्नूर में खामदेव की जातरा, परंदोली में जंगो बाई की जातरा और केस्लापूर में नागोबा जातरा। इनमें सबसे से प्रसिद्ध मेला 'नागोबा जातरा' है। यह मेला इन्द्रवेल्ली तहसील के केस्लापूर गाँव में होता है। इस मेले में विशेष रूप से मेश्राम (गोत्र) परिवार के लोग 'नाग देवता' की पूजा करते हैं। यह मेला लग-भग पंद्रह से लेकर बीस दिन तक चलता है। यहाँ पर देश के हर कोने से मेश्राम गोत्र परिवार के लोग उपस्थित होते हैं। केस्लापुर में नाग देवता, नाग देवता की पूजा करती हुई मेश्राम परिवार की युवतियाँ, केस्लापुर, इन्द्रवेल्ली तहसील, आदिलाबाद जिला। नाग देवता के बील की तैयारी करती हुई मेश्राम गोत्र की महिलाएँ, नाग देवता की पूजा के लिए पानी लाती हुई मेश्राम परिवार की महिलाएँ, केस्लापुर, इन्द्रवेल्ली तहसील, आदिलाबाद जिला। गोंड आदिवासी समुदाय के आराध्यदेव नाग देवता की महाजात्र में नागोबा मंदिर को साफ सूत्र कर पवित्र गंगा जल से नाग देवता की पूजा करते हैं। पूजा के बाद नाग देवता को कई प्रकार के नैवेद्य को समर्पित करते हैं। महापूजा के समय मेश्राम परिवार के आलावा मंदिर में अन्य किसी लोगों का प्रवेश वर्जित किया जाता है। उनका मानना है कि पूजा के समय नागदेवता मंदिर में प्रवेश करता है। इसके बाद मेश्राम परिवार की नवविवाहित वधुओं को नागदेवता से परिचित किया जाता है। उसके बाद अन्य लोगों को नाग देवता के दर्शन के लिए अनुमति दी जाती है। इस पूजा में भाग लेने वाले मेश्राम परिवार महिलाएँ हो या पुरुष हो सफेद रंग के पोशाक पहनते हैं। इस जात्रा में मेश्राम गोत्र के लोग भारत के किसी भी राज्य में हो वे यहाँ आ जाते हैं। यह एक गोत्र मिलन का मेला है ऐसे हम कह सकते हैं। इसमें भारत के भिन्न-भिन्न राज्यों से मेश्राम परिवार के लोग जैसे-महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, छतीसगढ़, झारखंड, ओडिसा और कर्नाटक आदि राज्यों से शामिल होते हैं। नाग देवता की पूजा के लिए गंगा जल लाया जाता है। गोदावरी से लाये हुए पानी को ढ़ोल बजाते हुए पानी को मंदिर में रख देते हैं। इसके बाद मेश्राम परिवार की महिलाओं द्वारा श्रीकोंडा से लेकर आए हुए घड़ों की विशेष पूजा की जाती है। और मंदिर में नागदेवता की पूजा की जाती है।

खान-पान

गोंड आदिवासी समुदाय के लोग अपने खेतों में उत्पन्न की गई फसलों पर अधिक निर्भर रहते हैं। वे मुख्य रूप से मुख्य खान-पान में चावल, ज्वार, गेंहूँ, मक्का और मोटे अनाज लेते हैं। वे कभी-कभी मक्का का दलिया बनाकर उसे पानी में उबालकर भोजन के रूप में लेते हैं। रात के समय वे चावल अधिक पसन्द करते हैं। फलों में आम, जामुन, सीताफल और आंवला और विभिन्न प्रकार के कन्द-मूल तथा दालें व देशी सब्जियों का खाने में प्रयोग करते हैं। वे मांस आहार के रूप बकरी, मुर्गी, मछली आदि को लेते हैं। साग-सब्जी के रूप में टमाटर, बैगन, मुंग फल्ली आदि का प्रयोग करते हैं।

वेशभूषा, गहने, गोदना

गोंड आदिवासी समुदाय के स्त्रियों के माते पर और हाथों पर गोदा हुआ रहता है। स्त्रियाँ साड़ी तरह का ही एक वस्त्र होता है उसे पहनती हैं, जिससे शरीर के ऊपर और नीचे का भाग ढंक जाता है। दो तीन दशक पहले गोंड समुदाय की स्त्रियाँ चोली पहना नहीं करती थी, आज वर्तमान समय में नहीं रहा है। कुछ बूढी स्त्रियाँ आज भी चोली नहीं पहनती हैं।

गोंड आदिवासी समुदाय के पुरुष लोग अपने शरीर को ढंकने के लिए विभिन्न प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग करते हैं। लग-भग पुरुष लोग लंगोटी से अपने शरीर को ढंक लेते हैं, कभी-कभी सिर में एक अंगोछा भी बांध लेते हैं। कुछ लोग पेट और कमर ढंकने के लिए अलग से पिछौनी लपेट लेते हैं। गोंड आदिवासी समुदाय के पुरुष पहनावा के रूप में धोती-खमिज,पगड़ी का प्रयोग करते थे लेकिन आज के समय में यह भी कम हुआ है।

गोंड आदिवासी समुदाय की महिलाएँ अपने संस्कृति के अनुसार गहने पहनावा करती हैं। यह पारंपरिक गहने कई प्रकार के धातुओं से बनाये जाते हैं जैसे मंगल सूत्र, पट्टी, कन्टे(गले की पट्टी), वेल्लोर (सांकली), नतनी और झुमके आदि गहने सोने से बनाई जाते हैं। पैर की ऊँगली में (गट्टा वंगरा) जोडवी, साकली, (पाँव की कड़ियाँ) को चांदी से बनायी जाती हैं। वे कमर में आभूषण, हाथों में कंगन आदि पहनावा करती हैं।

गोदना: गोंड आदिवासी समुदाय की महिलाएँ अपने माथे, हाथों और गले पर गोद लेती हैं। गोदने की परंपरा इस समुदाय में प्राचीन काल से चली आ रही है। आज भी कुछ बुजुर्ग महिलाओं के माथे पर और हाथों पर गोदा हुआ हमें दिखाई देता है। लेकिन आजकल युवा पीढ़ी है जो इस पारंपरिक गोदन से दूर रही है। न तो वे अपने पारंपरिक पोशाक पहनते हैं, न तो वे गहने पहनते हैं। महिलाओं की गोदन की तस्वीरें हम नीचे देख सकते हैं।

निष्कर्ष

भारत के दूरवर्ती क्षेत्रों में आज के समय में भी अनेक मानव समुदाय हैं, जो हजारों वर्षों से मुख्य धारा के समाज से दूर अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए

हुए हैं। आदिलाबाद जिले के गोंड आदिवासी समुदाय के लोग आज भी वे अपने परंपरागत रीतिरिवाजों को अपनाते हैं। इन रीतिरिवाजों को उनके जन्म,विवाह,मृत्यु आदि संस्कारों में देख सकते हैं। गोंड आदिवासी समुदाय के सांस्कृतिक जीवन को जानने के लिए उनके पर्व-त्यौहार, देवी-देवता, रहन-सहन, खान-पान, विवाह तथा मेले आदि का अध्ययन करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. गोंडी धर्म दर्शन, मोतीराम छातीराम कंगाली, पृ.सं.55.
2. गोंडी धर्म दर्शन, मोतीराम छातीराम कंगाली, पृ.सं.55.